20

स्व-रोजगार

व्यवसाय की प्रवृति और कार्य क्षेत्र, व्यवसाय में सहायक सेवाएं, व्यावसायिक वातावरण, व्यावसायिक संगठनों के रूपों के बारे में जानने के बाद, अब आप अपनी आजीविका कमाने के तरीकों के विषय में सोच रहे होंगे। इस स्तर पर आपको यह तय करना होगा कि किसी संगठन में नौकरी करनी है या अपना खुद का व्यवसाय शुरू करना है। जब आप किसी भी संगठन में एक रोजगार को स्वीकार करते हैं, तो आपको अपने नियोक्ता की आवश्यकताओं के अनुसार विभिन्न प्रतिभा का प्रदर्शन करना होगा और आपको वेतन के रूप में आय की एक निश्चित राशि प्राप्त हो सकती है। लेकिन ढूंढ़ने की बजाय, आप अपनी आजीविका कमाने के लिए अपने दम पर व्यवसाय करने का विकल्प भी चुन सकते हैं। आप अपने क्षेत्र में एक छोटी किराने की दुकान, टेलरिंग की दुकान, रेस्तरां, बेकरी की दुकान, हलवाई की दुकान या ब्यूटी सैलून आदि चला सकते हैं। आप अपनी आजीविका कमाने के लिए छोटे पैमाने पर उत्पादों या सेवाओं का निर्माण, व्यापार विपणन या बिक्री में संलगन हो सकते हैं। इस प्रकार की आर्थिक गतिविधियों को स्व-रोजगार कहते हैं। एक व्यक्ति अपने स्वयं के रोजगार से प्राप्त आय से बहुत अच्छा जीवन जी सकता है। हालांकि स्थानीय जरूरतों को पहचानकर उपयुक्त एवं आकर्षक उद्यम की योजना बनाने और उसका चयन करने की आवश्यकता होती है। इस पाठ में हम व्यवसाय में स्व-रोजगार के करियर के अवसरों के विषय में विस्तार से जानेंगे।

अधिगम के प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद, शिक्षार्थी:

- स्व-रोजगार की विभिन्न संभावनाओं एवं स्व-रोजगार के मांगों का अन्वेषण करता है;
- छोटे व्यवसाय में सरकार के सहयोग से होने वाले लाभ का वर्णन करता है;

20.1 स्व-रोजगार का अर्थ

आप जानते हैं कि जीने के लिए कमाना कितना जरूरी है। आपके पिता, माता, भाई, बहन और अन्य आसपास के लोग जीने के लिए विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में संलग्न रहते हैं, क्या आपने कभी इन गतिविधियों पर विचार किया है? वे वास्तव में क्या करते हैं? संभवत: आपने उनमें से कुछ ऐसे लोगों को देखा होगा जो दूसरों के संगठन में कार्य करते हैं, फैक्ट्री, दुकान, कृषि क्षेत्र आदि से जुड़े होते हैं जिसके बदले में उन्हें नियोक्ता द्वारा एक निश्चित राशि का भुगतान उनकी सेवाओं के बदले में किया जाता है। लेकिन ऐसे कई लोग हैं जो स्वयं को एक व्यवसाय में संलग्न करते हैं, वे दूसरों के द्वारा संचालित संगठनों में मजदूरी या वेतन के लिए काम करने के बजाय अपना स्वयं का व्यवसाय और उसका प्रावधान करते हैं जिसकी पूरी आय उन्हीं की होती है। हम सभी ने देखा होगा छोटी किराने की दुकान, टेलरिंग की दुकान, मेडिकल स्टोर, आदि ये एक व्यक्ति द्वारा चलाई जाती है कभी सहायक के साथ तो कभी बिना किसी सहायक के। ऐसी आर्थिक गतिविधियां स्व-रोजगार कहलाती हैं। इस प्रकार कोई एक व्यक्ति इस प्रकार की आर्थिक गतिविधियों को चलाता है, तो उसे स्व-रोजगार कहते हैं। इस प्रकार, स्व-रोजगार को एक आर्थिक गतिविधि के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसे व्यक्ति अपने लाभ के लिए करता है। इस स्व-रोजगार के अंतर्गत अन्य सम्बन्धि त संसाधनों को जुटाने के लिए जोखिम लेने, माल खरीदने और बेचने या उन्हें एक मूल्य पर प्रदान करने जैसी गतिविधियां शामिल होती है।

उपरोक्त विवरण के अनुसार हमें स्व-रोजगार की निम्न विशेषताएं देखने को मिलती है-

20.2 स्व-रोजगार की विशेषताएं

स्व-रोजगार की विशेषताएं निम्न हैं-

1. इसके अंतर्गत वह कार्य शामिल होते हैं जिसमें अपनी जीविका चलाने के लिए व्यक्ति स्वयं ही कमाने के लिए कुछ कार्य करता है।
2. इसमें एक व्यक्ति का स्वामित्व और प्रबंधन होता है, हालांकि वह अपनी सहायता के लिए एक या दो व्यक्तियों की मदद ले सकता है। वह स्वरोजगार के द्वारा अन्य व्यक्तियों को भी रोजगार दे सकता है।
3. स्वरोजगार से होने वाली आय निश्चित नहीं होती है। यह उस व्यक्ति और उसमें कार्य करने के तरीके पर निर्भर होती है जिसमें वह सामान का उत्पादन, खरीद और बिक्री करके दूसरों को सेवाएं प्रदान करके कमा सकता है।
4. स्व-रोजगार में व्यक्ति अकेला ही लाभ कमाता है और उसमें होने वाले जोखिम को भी अकेला ही वहन करता है। इसलिए हम स्व-रोजगार में प्रयास एवं उसके परिणाम के बीच सीधा सम्बन्ध देखते हैं।

5. इसके लिए पूंजी निवेश की आवश्यकता होती है। यद्यपि वह बहुत छोटी मात्रा में हो सकती है।

6. स्व-रोजगार में व्यक्ति अपने व्यवसाय को लाभप्रद रूप से चलाने और अपने व्यवसाय के विस्तार के लिए आने वाले किसी भी अवसर का लाभ उठाने के संबंध में निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र होता है।

7. यह अपनी इच्छानुसार और लागू होने वाले कानूनी नियमों के मापदंडों के अनुसार कार्य करने की पूरी स्वतंत्रता देता है।

20.3 स्व-रोजगार का महत्व

करियर जीवन जीने की एक राह है। स्व-रोजगार भी इसी का वाहक है, क्योंकि एक व्यक्ति जो स्वयं को व्यवसाय या सेवा कार्यों में लगातार अपनी आजीविका कमा सकता है। बढ़ती बेरोजगारी और पर्याप्त रोजगार के अवसरों की कमी के साथ स्वरोजगार आज बहुत महत्वपूर्ण हो गया है।

आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पीएलएफएस) 2017-18 के अनुसार, कार्यबल में स्व-नियोजित की हिस्सेदारी 2011-12 और 2017-18 के बीच 52.2 प्रतिशत पर स्थिर रही, कार्यबल में स्व-नियोजित का भाग अधिक था, भारत के कुछ सबसे गरीब राज्यों में: छत्तीसगढ़ (66 प्रतिशत), राजस्थान (65 प्रतिशत), उत्तर प्रदेश (64 प्रतिशत) एवं झारखंड का प्रतिशत (61 प्रतिशत) रहा।

इसके महत्व को निम्न रूपों में देखा जा सकता है-

1. **छोटे व्यवसायों को लाभ :** छोटे स्तर के व्यवसाय में बड़े पैमाने के व्यवसाय से ज्यादा फायदे हैं। इसे आसानी से शुरू किया जा सकता है और इसमें कम मात्रा में पूंजी निवेश की आवश्यकता होती है। छोटे स्तर पर गतिविधियों से जुड़े स्व-रोजगार बड़े पैमाने पर व्यापार के विरुद्ध एक अच्छा विकल्प है जिससे पर्यावरण प्रदूषण, मलिन बस्तियों के विकास, श्रमिकों के शोषण आदि जैसे कई बुराइयों को जन्म दिया।

2. **वेतन रोजगार पर वरीयता :** स्व-रोजगार में आमदनी की कोई सीमा नहीं होती है जैसा कि वेतन रोजगार के मामले में देखा जाता है। स्व-रोजगार में व्यक्ति अपने हुनर का उपयोग अपने लाभ के लिए कर सकता है। इसमें निर्णय जल्दी एवं आसानी से लिया जा सकता है। ये सभी कारक स्व-रोजगार के लिए एक मजबूत प्रेरक के रूप में काम करते हैं, जिन्हें वेतन रोजगार पर प्राथमिकता दी जाती है।

3. **उद्यमिता की भावना का विकास करना :** उद्यमिता में जोखिम उठाना भी शामिल होता क्योंकि एक उद्यमी नए उत्पादों, उत्पादन और विपणन के नए-नए तरीकों के प्रयोग की कोशिश करता है। दूसरी ओर स्वरोजगार में या तो जोखिम नहीं होता है और

होता भी है तो बहुत कम स्तर का। लेकिन अतिशीघ्र एक स्व-रोजगार करने वाला व्यक्ति अपने कार्य में नवाचार करने के लिए कदम उठाता है और अपने व्यवसाय को बढ़ा लेता है, तब वह एक उद्यमी की श्रेणी में आ जाता है। इस प्रकार स्वरोजगार उद्यमिता के लिए एक लांचिंग पैड बन जाता है।

4. **व्यक्तिगत स्तर पर सेवाओं का प्रचार :** स्व-रोजगार भी व्यक्तिगत सेवाएं प्रदान करने का तरीका बताता है जैसे- सिलाई, मरम्मत कार्य, दवाओं का वितरण आदि। इस प्रकार की सेवाओं से उपभोक्ता को संतोषजनक मदद मिलती है। यह आसानी से आरंभ किया जा सकता है और व्यक्तिगत रूप से आगे बढ़ाया जा सकता है।

5. **रचनात्मकता के लिए गुंजाइश :** यह कला एवं शिल्प में रचनात्मकता और कौशल के विकास का अवसर प्रदान करता है, जिससे भारत की सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण होता है। उदाहरण के लिए, हम हस्तशिल्प और हथकरघा उत्पादों आदि में प्रतिबिंबित रचनात्मक विचार देख सकते हैं।

6. **बेरोजगार की समस्या को दूर करने में सहायक :** स्वरोजगार बेरोजगारों को लाभकारी व्यवसाय का अवसर प्रदान करता है जो बेरोजगार होते हैं और उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में मदद करते हैं। इस प्रकार यह बेरोजगारी की समस्या को भी कम करता है।

7. **उच्च शिक्षा के सम्बन्ध में वंचित वर्ग के लिए वरदान :** प्रत्येक व्यक्ति उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम नहीं होता। किसी न किसी कारण से वे केवल हायर सैकेंडरी तक ही पढ़ाई कर पाते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने करियर को स्व-रोजगार के माध्यम से शुरू कर सकते हैं जिसमें उच्च शिक्षा की जरूरत नहीं होती है, स्व-रोजगार भारत में एक बड़े रूप में फैला है इसका कारण है सरकार के नीतियों और विभिन्न कार्यक्रम जो लघु एवं मध्यम उद्यमों को प्रोत्साहित करते हैं। उद्यमिता और स्व-रोजगार को प्रोत्साहित करने के लिए पूरे देश में कई योजनाएं शुरू की गई हैं।

पाठ्यक्रम प्रश्न-20.1

1. 'स्व-रोजगार' को अपने शब्दों में परिभाषित करें।

2. स्वरोजगार के अंतर्गत कौन-सा उदाहरण सही है अपने उत्तर के सामने 'सही' का निशान लगाएं।

   (अ) एक कर्मचारी एक फैक्ट्री में काम कर रहा है।

   (ब) एक व्यक्ति जो स्टेशनरी की दुकान चला रहा है।

   (स) एक व्यक्ति जो बैंक में मैनेजर का काम कर रहा है।

   (द) एक व्यक्ति जो दवाई की दुकान चला रहा है।

20.4 स्व-रोजगार के मार्ग

भारत सरकार कृषि और औद्योगिक अर्थव्यवस्था के विकास के लिए अपने निरंतर प्रयास के माध्यम से लोगों के लिए कई स्व-रोजगार के अवसर पैदा करने में सक्षम रही है। हालांकि, स्वरोजगार में एक उपयुक्त करियर चुनने से पहले आपको उन मार्गों के विषय में कुछ विचार करना होगा जिसमें स्व-रोजगार के अवसर उपलब्ध हैं।

आइये, हम निम्नलिखित व्यापक क्षेत्रों में स्वरोजगार के अवसरों को वर्गीकृत करें-

1. व्यापार
2. विनिर्माण
3. पेशेवर एवं
4. व्यक्तिगत सेवाएं

आइये इन क्षेत्रों पर विस्तार से चर्चा करें-

1. **व्यापार :** आप जानते हैं कि व्यापार में वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने और बेचने की प्रक्रिया होती है। कम पूंजी निवेश करके एक छोटी ईकाई का व्यवसाय चलाया जा सकता है। आपने अपने आसपास के क्षेत्रों में छोटी-छोटी किराने और स्टेशनरी की दुकानें देखी होंगी। यदि आप ज्यादा पूंजी निवेश करना चाहते हैं और आप जोखिम वहन करने के लिए तैयार हैं तो थोक व्यापार आरंभ कर सकते हैं। यह आपके लिए अच्छा विकल्प हो सकता है। कोई एजैंसी लेकर भी स्टॉकिस्ट बन सकता है रियल इस्टेट भी आजकल बहुत फल-फूल रहा है, इसलिए यह भी एक आकर्षक विकल्प हो सकता है।

2. **विनिर्माण :** कोई भी व्यक्ति छोटा उद्योग शुरू कर सकता है जैसे ईंट बनाना, या बेकरी का उत्पादन या हलवाई की दुकान, इन सब व्यवसायों में कम पूंजी राशि एवं कम से कम संसाधनों की आवश्यकता होती है। खेती-बाड़ी भी एक-दूसरा क्षेत्र है जिसमें व्यक्ति सभी कार्य अकेले कर सकता है या एक या दो व्यक्तियों की मदद ले सकता है। यह स्व-रोजगार का एक पुराना कार्य क्षेत्र है। बाग, डेयरी, मुर्गी पालन, रेशम का उत्पादन, मछली पालन एवं बागवानी आदि स्वरोजगार के अच्छे उदाहरण हैं।

3. **पेशेवर :** किसी भी व्यवसाय के लिए आवश्यक है कि उसका विशेष ज्ञान और प्रशिक्षण प्राप्त हो तो विशेष क्षेत्र में स्वरोजगार के अनेक अवसर उपलब्ध हो सकते हैं। वकील, डॉक्टर, चार्टेड, एकाउंटेट, आर्किटेक्ट एवं जर्नलिस्ट इस श्रेणी में आ सकते हैं। हालांकि उन्हें अपने संघ द्वारा बनाई गए आचार संहिता का पालन करना होगा और विशेष ज्ञान तथा प्रशिक्षण प्राप्त करना होगा।

टिप्पणी

4. **व्यक्तिगत सेवाएं:** सिलाई, मोटर रिपेयरिंग, हेयर कटिंग, फैशन डिजाइनिंग, गृह-सज्जा आदि कुछ व्यापारिक गतिविधियां हैं जो व्यक्तिगत रूप से उपभोक्ताओं को प्रदान की जाती हैं। यह आसानी से आरंभ हो जाती है और अकेले भी चलाई जा सकती है। यह गतिविधियां व्यक्तिगत कौशल पर आधारित होती हैं जैसे- लुहार, कारपेंटर, सुनार, फैशन डिजाइनर, हेयर स्टाइलिस्ट, कार्टूनिस्ट आदि। यहां व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार काम करने की स्वतंत्रता होती है।

आप स्वयं के स्वरोजगार में करियर बनाने के लिए अपनी रुचि के क्षेत्र को चुनते हैं। अगर आप अपना छोटा-सा व्यवसाय शुरू करने का निर्णय लेते हैं तो आपको उस उत्पाद या सेवा क्षेत्र के बारे में पूर्ण जानकारी होनी चाहिए जिसे आपने चुना है। हमारे देश में छोटे व्यवसाय के दायरे और महत्व के बारे में भी जानकारी होना आवश्यक है साथ ही अपने व्यवसाय में सफलता प्राप्त करने के लिए सरकारी नीति और संस्थागत समर्थन के बारे में पूरी जानकारी और समझ भी बहुत आवश्यक है।

आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पीएलएफएस) 2017-18 के अनुसार, स्वरोजगार में बड़ा हिस्सा (60 प्रतिशत) कृषि में लगे हुए थे। गैर-कृषि गतिविधियों में लगे लोगों मेन अधिकांश व्यापार, विनिर्माण, परिवहन एवं भंडारण में संलग्न है।

20.5 लघु व्यवसाय का अर्थ

जब आपसे कोई प्रश्न करता है कि 'लघु व्यवसाय क्या है?' तब निश्चित ही आपका उत्तर होगा कि जो व्यवसाय:

- आकार में छोटा हो।
- कम पूंजी निवेश की आवश्यकता हो
- कम संख्या में उसमें कर्मचारी हों
- जिसका लाभ का स्तर भी कम हो ऐसे व्यवसाय लघु व्यवसाय कहलाते हैं।

हाँ! आपका उत्तर बिल्कुल सही है। आकार, पूंजी निवेश, कर्मचारियों की संख्या, आउटपुट की वैल्यु के साथ-साथ आउटपुट का मूल्य एक व्यावसायिक उद्यम को मापने का सबसे सामान्य मापदण्ड है।

लघु व्यवसाय को परिभाषित करते हुए हम कह सकते हैं कि यह एक ऐसा व्यवसाय है जो मालिक के द्वारा प्रबंधित किया जाता है, अपने आसपास के क्षेत्रों में संचालित होता है और आकार में छोटा होता है।

भारत सरकार ने संयंत्र और मशीनरी में स्थिर पूंजी निवेश को हमारे देश में छोटी औद्योगिक इकाई को परिभाषित करने के लिए एकमात्र मानदंड माना जाता है। वर्ष 1958 तक एक

औद्योगिक इकाई जिसमें नियत पूंजी निवेश 5 लाख से कम था। जो विद्युत प्रयोग कर रही थी, उनमें 50 कर्मचारियों तक और जो विद्युत प्रयोग नहीं कर रही थी, उनमें 100 कर्मचारियों तक को लघु व्यवसाय के रूप में गिना जाता था। इस सीमा को सरकार ने समय-समय पर बदला है।

एमएसएमईडी (MSMED) अधिनियम 2006 के तहत भूमि एवं भवन में निवेश को छोड़कर संयंत्रों और मशीनरी में किया गया पूंजी निवेश-

1. 25 लाख और 5 करोड़ (50 मिलियन) के बीच निवेश करने वाला विनिर्माण इकाइयों को लघु उद्यम कहा जाता है।
2. सेवा इकाइयों के लिए 10 लाख से 2 करोड़ (20 मिलियन) के बीच निवेश करना लघु उद्यम कहलाता है।

उपरोक्त चर्चा से अब हम छोटे व्यवसाय की मुख्य विशेषताओं की पहचान कर सकते हैं-

(i) एक लघु व्यवसाय स्वयं के द्वारा चलाया जाता है और इसे एक या अधिक लोग संचालित कर सकते हैं।

(ii) इसकी हर दिन की गतिविधि में इसका मालिक शामिल रहता है।

(iii) व्यवसाय के प्रबंधन में सहभागिता त्वरित निर्णय लेने की प्रेरणा देती है।

(iv) लघु व्यवसाय को स्थापित करने का स्थान सीमित होता है। यह साधारणत: सामान्य लोगों की आवश्यकता के अनुरूप होता है।

(v) छोटी व्यावसायिक इकाइयां आमतौर पर श्रम गहन होती हैं और इसलिए इसमें कम पूंजी निवेश की आवश्यकता होती है।

(vi) इसको चलाने के लिए स्थानीय संसाधनों का ही प्रयोग किया जाता है। ये लघु व्यवसाय ऐसे स्थान पर लगाए जाते हैं जहां कच्चे माल की प्राप्ति आसानी से हो सके जैसे- श्रमिक आदि।

(vii) गेस्टेशन पीरियड (वह अवधि जो किसी व्यवसाय को अपने निवेश कर लाभ प्राप्त करने के लिए इंतजार करना पड़ता है) की अवधि कम होती है।

(viii) एक छोटे व्यवसाय का संचालन लचीला होता है, यह सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक स्थितियों में परिवर्तन के अनुसार उत्पादन आदि की संचालन प्रक्रिया की अपनी प्रवृति को आसानी से बदल सकता है।

पाठगत प्रश्न 20.2

1. लघु व्यवसाय का अपने शब्दों में अर्थ बताइये।
2. निम्नलिखित में से लघु व्यवसाय की श्रेणी निर्धारित करें। प्रत्येक वाक्य के सामने दिए गए बॉक्स में उत्तर लिखें-

   (अ) रवि एक किसान है जिसके पास 4 एकड़ जमीन है। उसने अपने खेतों की देखभाल के लिए 3 लोगों को नियुक्त किया है। ( )

   (ब) राम केन्द्रीय बाजार, कोलकाता में एक छोटी डिपार्टमेंटल दुकान चलाता है। ( )

   (स) गीता एक डॉक्टर है जो अपना क्लिनिक चलाती है। ( )

   (द) करन के पिता आर्डर लेकर कालीन बनाते हैं। ( )

   (य) हरी, सोने की चेन के साथ-साथ दूसरे आभूषणों की मरम्मत करता है। ( )

20.6 लघु व्यवसाय के प्रकार

भारत में विभिन्न प्रकार के लघु व्यवसाय पाए जाते हैं- उन्हें संयंत्र और मशीनरी में, एक निश्चित पूंजी में निवेश के आधार पर या संचालन के प्रकृति या स्थान के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है- कुछ मुख्य प्रकार के लघु व्यवसाय निम्नलिखित हैं-

(अ) लघु व्यवसाय
(ब) सूक्ष्म व्यवसाय
(स) सहायक औद्योगिक उपक्रम
(द) ग्रामोद्योग
(य) कुटीर उद्योग
(र) व्यापारिक इकाई

आइये इसके विषय में विस्तार से जानें-

(अ) लघु व्यवसाय : एमएसएमइडी (MSMED) अधिनियम 2006 के तहत छोटे पैमाने के उद्यमों को विनिर्माण एवं सेवाओं के आधार पर दो प्रमुख श्रेणियो में वर्गीकृत किया गया है- जैसे (1) विनिर्माण (2) सेवाएं:

- छोटे विनिर्माण उद्यमों में संयंत्रों और मशीनरी में 25 लाख रुपए निवेश कर सकते हैं पर यह 5 करोड़ से अधिक नहीं होना चाहिए।
- वहीं, सेवाओं के लिए संसाधनों पर किया गया खर्च 10 लाख से लेकर 2 करोड़ तक होना चाहिए, इससे जयादा नहीं। लघु उद्योग क्षेत्र में लगभग 21 प्रमुख उद्योग समूह हैं।

(ब) सूक्ष्म व्यवसाय : एमएसएमईडी अधिनियम 2006 के अनुसार प्लांट एवं मशीनरी के साथ-साथ भूमि एवं भवन के निर्माण के लिए निवेश होना चाहिए:

- सूक्ष्म व्यवसाय में विनिर्माण इकाई के लिए पूंजी निवेश 25 लाख से (2.5 मिलियन) से कम होना चाहिए।
- सेवा इकाई में पूंजी का निवेश 10 लाख (1 मिलियन) तक होना चाहिए।

(स) सहायक औद्योगिक उपक्रम: जब एक छोटे पैमाने पर उद्योग अपने उत्पादन का कम से कम 50 प्रतिशत किसी अन्य उद्योग को आपूर्ति करता है, तो इसे सहायक औद्योगिक उपक्रम कहा जाता है। इसके लिए स्थायी पूंजी की निवेश सीमा 1 करोड़ पर होनी चाहिए। यदि सहायक इकाई किसी अन्य व्यावसायिक इकाई के स्वामित्व में है, तो यह इसे छोटे व्यवसाय की स्थिति को नुकसान पहुंचाती है।

(द) ग्रामोद्योग : यह इकाई जो ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है और जो पावर या बिना किसी पावर के उपयोग के माल या सेवा का उत्पादन करती है और जिसमें प्रति कारीगर या श्रमिक के लिए निश्चित पूंजी निवेश समय-समय पर केन्द्र सरकार द्वारा निर्दिष्ट किया जाता है।

(य) कुटीर उद्योग : वे छोटी विनिर्माण इकाई है जो कुछ विशिष्ट बल या कौशल जैसे हस्तशिल्प, फिलीग्री आदि का प्रयोग कर एक सामान्य उत्पाद निर्माण करती हैं। वे उत्पादन के लिए स्वदेशी प्रौद्योगिकी के साथ सरल उपकरणों का उपयोग करते हैं। कुटीर उद्योगों को पूरी तरह से या मुख्य रूप से परिवार के सदस्यों की मदद से या पूरे या अंशकालिक रूप से चलाया जाता है। इस इकाई को पूंजी निवेश के आधार पर परिभाषित नहीं किया जाता है।

(र) व्यापार इकाई : ये अधिकतर बाजार में छोटे-छोटे दुकानदारों के रूप में पाए जाते हैं।

20.7 भारत में लघु व्यवसाय का महत्व

अभी तक हमने लघु व्यवसाय के अर्थ, विशेषताएं एवं विभिन्न प्रकारों के बारे में जाना। आइये, अब इसके महत्व को देखें। ये छोटे-छोटे उद्योग हर स्थान पर दिखाई देते हैं। ये किसी भी देश की सामाजिक अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत के दुर्लभ पूंजी संसाधन और प्रचुर श्रम और प्रावृतिक संसाधनों की दृष्टि से, छोटे पैमाने के उद्यमों को देश की आर्थिक योजना में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। भारत में छोटे उद्यमों की, देश की औद्योगिकी इकाइयों में 95 प्रतिशत हिस्सेदारी है। भारत में विनिर्माण क्षेत्र का उत्पादन, सकल मूल्य का 35 प्रतिशत है। इन योगदानों के अलावा, निम्न कारकों के कारण छोटे पैमाने पर व्यवसाय का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है।

1. लघु व्यवसाय उद्यम हमारे देश में तत्काल और बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर पैदा करने में सक्षम हैं।
2. बड़े उद्योगों की तुलना में कम पूंजी निवेश की आवश्यकता होती है।

3. स्थानीय संसाधनों और कम संस्थानों के उपयोग और कम प्रचालन लागत के कारण इसके उत्पादन की लागत कम है।

4. लघु उद्योग देश के अप्रयोगित संसाधनों को प्रभावी रूप से जुटाने में मदद करते हैं। स्थानीय संसाधनों और स्वदेशी तकनीक की मदद से, ग्रामीण और कुटीर उद्योगों द्वारा विश्व स्तरीय उत्पाद तैयार किए जाते हैं।

5. लघु उद्योग देश के संतुलित क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देते हैं। इन्हें आसानी से उन संसाधनों के स्रोत के पास स्थापित किया जा सकता है जो उस स्थान को समग्र आर्थिक विकास की ओर ले जाते हैं।

6. लघु उद्योग विदेशों में गुणवत्तापूर्ण उत्पाद निर्यात करके राष्ट्रीय छवि को बेहतर बनाने में मदद करते हैं। भारतीय हस्तशिल्प और हथकरघा उत्पाद, फिलीग्री के काम की अंतर्राष्ट्रीय बाजार में ज्यादा मांग है।

7. लघु उद्यम लोगों के जीवन स्तर को बढ़ाने में मदद करते हैं। इससे लोगों को रोजगार मिलता है और अपना स्वयं का उद्यम भी आसानी से शुरू किया जा सकता है। उन्हें अपने दैनिक उपभोग और उचित मूल्य पर उपयोग के लिए कई प्रकार के गुणवत्ता वाले उत्पाद मिलते हैं।

20.8 लघु व्यवसाय के लिए संभावनाएं

लघु व्यवसाय का दायरा व्यापक है जिसमें खुदरा बिक्री से लेकर निर्माण तक कई तरह की गतिविधियां शामिल हैं। आर्थिक गतिविधियों के कुछ विशिष्ट क्षेत्र हैं जो छोटे व्यवसाय उद्यमों का गठन करके प्रभावी ढंग से और सफलतापूर्वक प्रबंधित किए जा सकते हैं। आइये छोटे व्यवसाय की संभावनाओं पर चर्चा करें।

1. वस्तुओं और सेवाओं की खरीद और बिक्री में शामिल ट्रेडिंग को कम पूंजी एवं कम समय के साथ शुरू किया जा सकता है। आर्थिक गतिविधियों के इस क्षेत्र में छोटे स्तर के उद्यमियों का वर्चस्व रहता है।

2. जिन गतिविधियों के लिए व्यक्तिगत सेवा या मरम्मत की आवश्यकता होती है जैसे- मोटर रिपेयरिंग, टेलरिंग, बढ़ईगिरी, ब्यूटी पार्लर इत्यादि, वो व्यक्तिगत व्यवसाय उद्यमियों द्वारा शुरू किए जाते हैं।

3. जो लोग कंपनी या संस्था में कर्मचारी के रूप में कार्य करना पसंद नहीं करते हैं उनके लिए सबसे अच्छा विकल्प स्वरोजगार है। ये लोग अपना खुद का एक छोटा-सा उद्यम चलाकर स्वतंत्र रूप से व्यवसाय कर सकते हैं।

4. उन उत्पादों और सेवाओं के लिए जिनकी कोई मांग नहीं है या मांग किसी विशेष क्षेत्र तक सीमित है, लघु-व्यवसाय सबसे उपयुक्त है।

5. बड़ी औद्योगिक ईकाइयां छोटी ईकाइयों के सहयोग के बिना आसानी से नहीं चल सकती। ये औद्योगिक इकाइयों अक्सर कुछ हिस्सों या पूर्जों की आपूर्ति के लिए छोटी इकाइयों (सहायक औद्योगिक उपक्रम) पर निर्भर करती हैं, जो उनके द्वारा लाभप्रद रूप से उत्पादित नहीं की जा सकती हैं।
6. व्यवसाय प्रक्रिया आउटसोर्सिंग (बीपीओ) के संदर्भ में, कई नए क्षेत्र में छोटे व्यवसाय उद्यमों के लिए नये अवसर उपलब्ध हो रहे हैं।
7. व्यवसाय उद्यम, जिसे ग्राहकों के साथ-साथ कर्मचारियों के साथ, मालिकों के निरंतर संपर्क की आवश्यकता होती है, केवल छोटे उद्यमों के रूप में सफलतापूर्वक संचालित हो सकते हैं।

पाठगत प्रश्न 20.3

1. आर्थिक गतिविधि के किसी भी दो विशिष्ट क्षेत्रों की पहचान करें जिन्हें एक लघु व्यवसाय उद्यम द्वारा प्रभावी रूप से प्रबंधित किया जा सकता है।
2. संयंत्र और मशीनरी में स्थायी पूंजी निवेश के आधार पर लघु उद्योग के प्रकार का नाम बताइये।

   (अ) प्लांट और मशीनरी में स्थायी पूंजी निवेश का कुल राशि 25 लाख से अधिक नहीं है।

   (ब) संयत्र और मशीनरी में स्थायी पूंजी निवेश की कुल राशि 10 लाख से अधिक नहीं है।

   (स) प्लांट और मशीनरी में स्थायी पूंजी निवेश की कुल राशि 2 करोड़ तक है।

   (द) संयंत्र और मशीनरी में स्थायी पूंजी निवेश की कुल राशि 5 करोड़ से अधिक नहीं है।

20.9 लघु व्यवसायों के प्रति सरकार की नीति

भारत सरकार ने देश के सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों के विकास की अपनी विशाल क्षमता के कारण लघु व्यवसाय उद्यमों को विशेष महत्व दिया गया है। बदलती आर्थिक स्थिति को देखते हुए समय-समय पर कई प्रकार की सहायता की घोषणा की जाती है। भारत में छोटे व्यवसाय के विकास के लिए सरकार द्वारा उठाए गए ऐसे कुछ कदम निम्नलिखित हैं-

1. यह उदारीकृत ऋण नीति प्रदान करती है जैसे लघु उद्योगों के लिए ऋण और अग्रिम रियायती दर पर ऋण आदि की प्रक्रिया के लिए कम से कम औपचारिकता पूर्ण करनी होती है।

2. बड़े पैमाने के उद्योगों के साथ प्रतिस्पर्धा से दूर रखने के लिए भारत सरकार ने लघु उद्योगों द्वारा विशेष उत्पादन के लिए लगभग 800 उत्पादों को आरक्षित किया है।
3. छोटे पैमाने के उद्योगों के लिए वस्तुओं और सेवाओं (जीएसटी) के भुगतान से छूट की सीमा 1 अप्रैल, 2019 से जीएसटी संरचना योजना के तहत 40 लाख टर्न ओवर, तक बढ़ा दी गई है। छोटे व्यापारी और व्यवसाय 1.5 करोड़ के टर्न ओवर के आधार पर 1 प्रतिशत दर का भुगतान कर सकते हैं, 1 अप्रैल, 2019 से पहले यह सीमा 1 करोड़ के टर्न ओवर पर थी।
4. सरकार द्वारा छोटे व्यवसायों से ही उत्पाद खरीदने को प्राथमिकता दी जाती है जब विभाग या संस्था के लिए स्टेशनरी या दूसरी सामग्री लेनी होती है।
5. लघु उद्योगों के प्रोत्साहन वित्त पोषण और विकास के लिए कई संस्थान जैसे भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (एसआईडीबीआई) कृषि एवं ग्रामीण विकास के लिए राष्ट्रीय बैंक (एनएबीएआरडी), जिला उद्योग संस्थान (डीआईसी) आदि सरकार द्वारा स्थापित किए गए हैं।
6. भारत सरकार ने देश में छोटे व्यवसाय उद्यमों के विकास की प्रभावी योजना और निगरानी के लिए सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के लिए अलग मंत्रालय (http://msme.gov.in) की स्थापना की है।
7. बड़ी संख्या में लघु उद्योगों को अपने योजनाओं और नीतियों का लाभ प्रदान करने के लिए, इसमें निवेश की सीमा को 3 करोड़ से घटाकर 1 करोड़ कर दिया गया है।
8. सरकार लघु उद्योग के चुनिंदा क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी में निवेश के लिए 12 प्रतिशत की पूंजी सब्सिडी प्रदान करती है।
9. कुल गुणवत्ता प्रबंधन को बढ़ाने के लिए सरकार आईएसओ 9000 प्रमाणीकरण प्राप्त करने वाली इकाई को 75000/- का अनुदान प्रदान करती है।
10. हथकरघा क्षेत्र के वित्त, डिजाइन एवं (मार्किंग) अंकन में सहायता प्रदान करने के लिए दीनदयाल हथकरघा प्रचार योजना शुरू की गई है।
11. भारत सरकार ने अन्य औद्योगिक इकाइयों द्वारा लघु उद्योगों की कुल हिस्सेदारी के लिए 24 प्रतिशत तक की अनुमति दी है।
12. सरकार छोटे व्यवसाय उद्यमों को रियायती दरों पर भूमि, बिजली और पानी आदि प्रदान करती है।
13. ग्रामीण एवं पिछड़ा क्षेत्र में लघु व्यवसाय स्थापित करने पर सरकार द्वारा प्रोत्साहन राशि की व्यवस्था की गई है।

14. सरकार विकसित भूमि और औद्योगिक इस्टेट प्रदान करके छोटे उद्योगों की स्थापना को प्रोत्साहित करती है।

15. मध्यम एवं लघु व्यवसाय उद्यम क्षेत्र को मुद्रा योजना के माध्यम से पूंजी प्रदान करने की योजना बनाई है जो स्वयं का व्यवसाय स्थापित करना चाहते हैं।

16. कुछ सरकारी नीतियां, कौशल भारत मिशन के अनुसार कौशल निर्माण की गतिविधि यों पर केन्द्रित हैं और यह स्व-रोजगारी व्यक्तियों को अधिक उत्पादक नौकरी शुरू करने की अनुमति प्रदान करती है।

17. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने कृषि, बागवानी और खाद्य प्रसंस्करण जैसे क्षेत्रों में महिलाओं को प्रशिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण और रोजगार कार्यक्रम आरंभ किया है। हथकरघा, यात्रा और पर्यटन, हॉस्पीटैलिटी, कम्प्यूटर और आईटी सेवाओं आदि क्षेत्रों में प्रशिक्षण दिया गया। जहां कोई औपचारिक पहुंच नहीं थी विशेषकर ग्रामीण भारत में कौशल प्रशिक्षण सुविधाओं का अभाव था।

18. 2015 में शुरू की गई एक अन्य सरकारी पहल स्टैंड अप इंडिया ने विनिर्माण क्षेत्र में ग्रीन फील्ड उद्यमों की स्थापना के लिए महिला उद्यमियों, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के व्यक्तियों को संस्थागत ऋण प्रदान करने का प्रयास किया है। स्टैंड-अप इंडिया पोर्टल छोटे उद्यमियों के लिए एक डिजीटल प्लेटफार्म के रूप में भी कार्य करता है और उन्हें वित्त पोषण और ऋण गारंटी के विषय में जानकारी प्रदान करने में मदद करता है।

20.10 लघु व्यवसायों को संस्थागत सहयोग

एक व्यवसाय आरंभ करते समय आवश्यकता होती है विभिन्न स्रोतों एवं सुविधाओं की। यह तकनीकी, वित्तीय, बाजार या प्रशिक्षण किसी भी प्रकार का सहयोग हो सकता है। इस प्रकार के सहयोग भी सरकार द्वारा समय-समय पर विभिन्न संगठनों एवं संस्थाओं के माध्यम से प्रदान किए जाते हैं। आइये ऐसे कुछ संगठनों के विषय में जानें जो इस प्रकार का सहयोग प्रदान करते हैं-

1. **राष्ट्रीय लघु उद्योग कार्पोरेशन लिमिटेड :** राष्ट्रीय लघु उद्योग कार्पोरेशन लिमिटेड (एनएसआईसी) की स्थापना 1955 में हुई थी, जो भारत में लघु उद्योगों के पालन और सहायता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हुई थी। यह लघु उद्योगों को प्रचार सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता है। यह भाड़े की खरीद योजनाओं के तहत और पट्टे के आधार पर लघु उद्योगों को मशीनरी प्रदान करती है। यह छोटे उद्योगों के उत्पाद को निर्यात बाजार में मदद करती है। यह प्रौद्योगिकी के विकास और उन्नयन तथा लघु उद्योगों के आधुनिकीकरण कार्यक्रम के कार्यान्वयन में भी मदद करती है।

2. **राज्य स्तरीय लघु उद्योग विकास कार्पोरेशन :** राज्य स्तरीय लघु उद्योग विकास कार्पोरेशन (एसएसआईडीसीएस), हमारे देश के विभिन्न राज्यों में स्थित है जो लघु, छोटे एवं ग्रामीण उद्योगों के विकास की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। इनका मुख्य उद्देश्य संसाधनों का वितरण होता है जैसे- कच्चा माल उपलब्ध कराना, मशीनों को भाड़े से उपलब्ध कराना और उनकी बिक्री के लिए बाजार की सुविधा प्रदान करना है।

3. **राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक :** राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (एनएबीएआरडी) की स्थापना एपेक्स संस्थान के रूप में 1982 में की गई जिसका उद्देश्य कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्रों को वित्तिय सहयोग प्रदान करना है। यह क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों और सहकारी बैंक द्वारा कृषि, छोटे पैमाने पर कुटीर और ग्रामीण उद्योग, हस्तशिल्प और ग्रामीण क्षेत्रों में अन्य सम्बद्ध गतिविधियों को वित्तीय सहायता प्रदान करता है।

4. **भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक :** भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक की स्थापना (एसआईडीबीआई) 1990 में लघु उद्योग को प्रोत्साहन, वित्त पोषण और विकास के लिए एक प्रमुख वित्तीय संस्थान के रूप में की गई। यह देश भर के लघु उद्योगों को ऋण की सुविधा प्रदान करने वाले सभी बैंकों के लिए एक सर्वोच्च संस्था के रूप में कार्य करता है।

5. **लघु उद्योग सेवा संस्थान :** लघु उद्योग सेवा संस्थान (एसआईएसआईएस) छोटे उद्यमों को परामर्श और प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए स्थापित किए गए हैं। यह संस्था तकनीकी सहायता सेवा प्रदान करती है और उद्यम विकास कार्यक्रमों का संचालन करती है। वह लघु उद्योगों को बाजार तथा उसकी जानकारी भी प्रदान करती है।

6. **जिला उद्योग केन्द्र:** देश भर में छोटे उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए जिला स्तर पर जिला उद्योग केन्द्र स्थापित किए गए हैं। वे संसाधनों की उपलब्धता को ध्यान में रखकर उद्योगों की क्षमता का सर्वेक्षण करते हैं। केन्द्र और राज्य सरकारों की विभिन्न योजनाओं का कार्यान्वयन इनका प्रमुख कार्य है। उपयुक्त मशीनरी उपकरण और कच्चे माल के चयन में नई इकाइयों की स्थापना के लिए उद्यमियों को प्रोत्साहन भी देती है।

पाठगत प्रश्न 20.4

1. एसआईएसआईएस (SISIS) द्वारा लघु उद्योगों को प्रदान किए जाने वाली 5 सहायताओं को बताइये।

2. नीचे दिए गए शब्दों के पूरा नाम लिखें-

   (अ) डीआईसी

(ब) एसआईडीबीआई

(स) एनएबीएआरडी

(द) एनएसआईसी

(य) एसएसआईडीसी

पाठांत प्रश्न

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. 'स्व-रोजगार' का क्या अर्थ है?
2. लघु व्यवसाय की दो विशेषताएं बताइये।
3. सूक्ष्म उद्योग क्या है?
4. भारत में पाए जाने वाले लघु उद्योगों के प्रकारों की गणना करें।

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. स्व-रोजगार की किन्हीं चार विशेषताओं का उल्लेख करें।
2. स्व-रोजगार के दो मार्गों के विषय में बताइये।
3. लघु व्यवसाय की चार विशेषताएं बताइये।
4. भारत में लघु व्यवसाय को सहयोग करने वाली संस्था एसआईडीबीआई एवं एसआईएसआई के विषय में बताइये।
5. लघु व्यवसाय किस क्षेत्र में सफलतापूर्वक स्थापित किए जा सकते हैं?

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

1. स्व-रोजगार के लाभ के चार बिन्दुओं की व्याख्या करें।
2. लघु उद्योगों के चार प्रकारों के विषय में बतायें।
3. भारत में लघु उद्योगों को सहयोग प्रदान करने वाली विभिन्न संस्थाओं के विषय में बताइये।
4. भारत सरकार द्वारा लघु उद्योगों के सहायक के रूप में लागू 6 प्रकारों के विषय में बताइये।
5. भारत में लघु उद्योग के महत्व का वर्णन करें।
6. 12वीं कक्षा पास करने के बाद राधा अपना बुटिक खोलना चाहती है। उसके पिता ने उसे आवश्यक वित्तीय सहायता का आश्वासन दिया है। उसकी शिक्षिका ने भी उसे बताया कि कई सारी सरकारी एजेंसियां हैं जो इस प्रकार के व्यवसाय चलाने में मदद

करती हैं तो उनसे मदद लें। तो ऐसी एजेंसियों के नाम बतायें जो व्यवसाय को शुरू करने में सहायक होती है।

7. अनिल ने बचपन से ही देखा है कि उसके पिता एक अच्छी कंपनी में बड़े पद पर अधिकारी है लेकिन अधिकतर वे ऑफिस से घर दर से आते हैं और पूरी तरह थके होते हैं और अधिकतर समय तो वो ऑफिस के कार्य के दबाव के कारण टेंशन में ही रहते हैं। तो उसने निश्चय किया कि वह वेतनभोगी नौकरी में नहीं जाएगा। अनिल अपना व्यवसाय शुरू करना चाहता है तो उसे व्यवसाय के विभिन्न मार्गों के विषय में बताते हुए उससे होने वाले हानि एवं लाभ के विषय में भी बताइये-

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

20.1

2. हां (ब) एवं (द)

20.2

2. (अ) उत्पादन
   (ब) व्यापार
   (स) पेशेवर व्यवसाय
   (द) व्यक्तिगत स्तर पर सेवा
   (य) व्यक्तिगत स्तर पर सेवा (यदि कोई हो तो)

8.3

1. (अ) व्यापार
   (ब) व्यक्तिगत सेवा (यदि कोई हो तो)
2. (अ) सूक्ष्म उत्पादक उद्योग
   (ब) सूक्ष्म सेवा उद्योग
   (स) लघु-स्तर पर विनिर्माण उद्योग
   (द) सेवा उद्योग

8.4

1. (अ) परामर्श कार्य
   (ब) प्रशिक्षण
   (स) तकनीकी सहयोग सेवा

(द) उद्यमिता विकास कार्यक्रम

(य) व्यापार एवं बाजार की सूचना देना

2. (अ) जिला उद्योग संस्थान

(ब) भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक

(स) राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण बैंक

(द) राष्ट्रीय लघु उद्योग कार्पोरेशन

(य) राज्य लघु उद्योग विकास कार्पोरेशन

करें और सीखें

अपने आस-पास के क्षेत्र में 5 से 6 व्यावसायिक इकाइयों का सर्वेक्षण करें और उनके विषय में निम्नलिखित जानकारी एकत्रित करें।

(अ) स्व-रोजगार के मार्ग

(ब) पूंजी निवेश

(स) लघु व्यवसाय के प्रकार

(द) लघु उद्योगों को सरकारी सहयोग

(य) इन इकाइयों द्वारा समस्या का सामना (यदि कोई हो तो)

रोल प्ले

रमेश एक बुद्धिमान छात्र है लेकिन उसका दोस्त सुरेश बिल्कुल भी ऐसा नहीं है। वे दोनों बहुत अच्छे दोस्त हैं। 12वीं पास करने के बाद रमेश नजदीकी शहर में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए चला गया। छुट्टियों के दौरान जब वह गांव वापस आया तो उसने देखा कि सुरेश ने अपनी पढ़ाई छोड़ दी है और वह बहुत परेशान दिख रहा है।

यहां उनके बीच संवाद को दिया जा रहा है-

रमेश : तुम्हें क्या हुआ? तुम चिंतित लग रहे हो

सुरेश : मैंने अपनी पढ़ाई छोड़ दी और अब अपने माता-पिता के ऊपर बोझ बन गया हूं। मैं अपनी आजीविका कमाना चाहता हूं। मैं अपना करियर बनाना चाहता हूं।

रमेश : तुम कोई छोटा व्यवसाय क्यों नहीं शुरू कर देते?

सुरेश : छोटा व्यवसाय! मुझे इसका कोई आइडिया नहीं है।

रमेश : अच्छा! मेरे साथ आओ, मैं तुम्हें इसके विषय में विस्तार से बताता हूं।

रमेश ने सुरेश को छोटे व्यवसाय का अर्थ, विशेषता और संभावनाओं के विषय में बताया। साथ ही उसने सरकार द्वारा लघु उद्योगों को सहायता करने वाली विभिन्न संस्थाओं के विषय में चर्चा की। इस रोल प्ले में अपने पात्र का चयन करें और अपने दोस्त के साथ आपस के संवाद को पूर्ण करें या जारी रखें।

टिप्पणी

आपने क्या सीखा

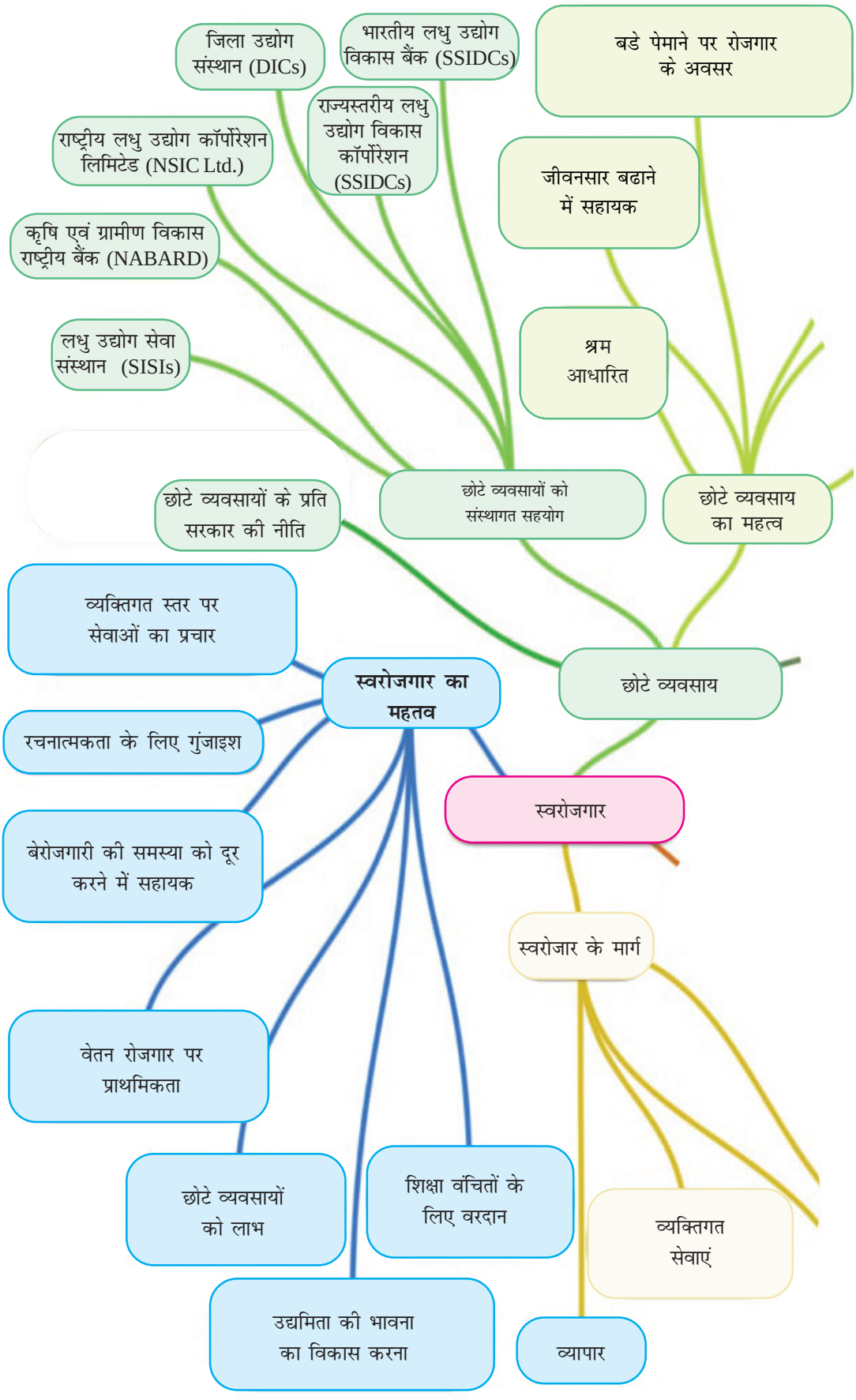
जिला उद्योग संस्थान (DICs)
भारतीय लधु उद्योग विकास बैंक (SSIDCs)
बडे पेमाने पर रोजगार के अवसर
राज्यस्तरीय लधु उद्योग विकास कॉर्पोरेशन (SSIDCs)
राष्ट्रीय लधु उद्योग कॉर्पोरेशन लिमिटेड (NSIC Ltd.)
जीवनसार बढाने में सहायक
कृषि एवं ग्रामीण विकास राष्ट्रीय बैंक (NABARD)
श्रम आधारित
लधु उद्योग सेवा संस्थान (SISIs)
छोटे व्यवसायों को संस्थागत सहयोग
छोटे व्यवसाय का महत्व
छोटे व्यवसायों के प्रति सरकार की नीति
व्यक्तिगत स्तर पर सेवाओं का प्रचार
छोटे व्यवसाय
स्वरोजगार का महतव
रचनात्मकता के लिए गुंजाइश
स्वरोजगार
बेरोजगारी की समस्या को दूर करने में सहायक
स्वरोजार के मार्ग
वेतन रोजगार पर प्राथमिकता
छोटे व्यवसायों को लाभ
शिक्षा वंचितों के लिए वरदान
व्यक्तिगत सेवाएं
उद्यमिता की भावना का विकास करना
व्यापार

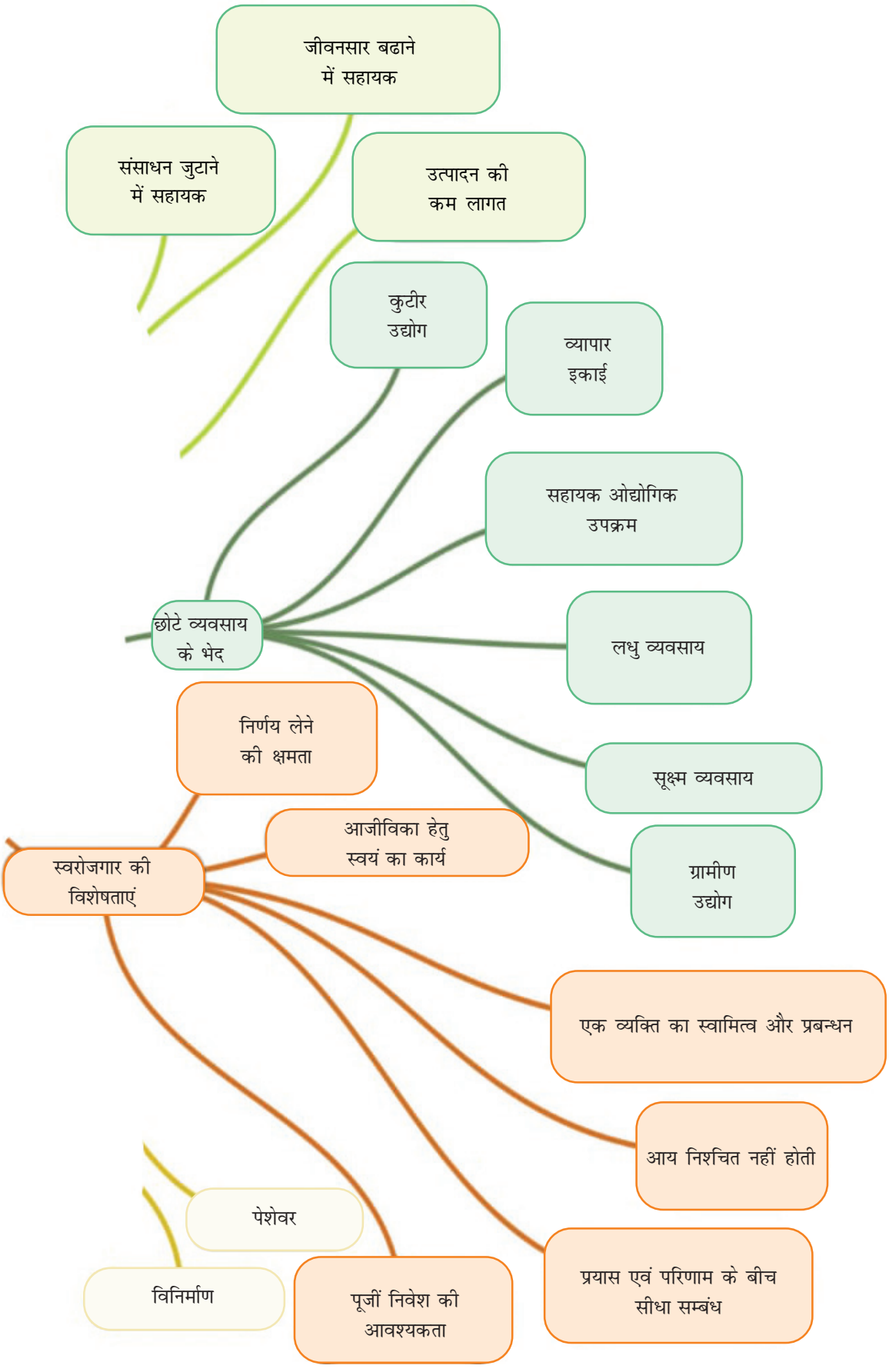
जीवनसार बढाने
में सहायक
संसाधन जुटाने
में सहायक
उत्पादन की
कम लागत
कुटीर
उद्योग
व्यापार
इकाई
सहायक ओद्योगिक
उपक्रम
छोटे व्यवसाय
के भेद
लधु व्यवसाय
निर्णय लेने
की क्षमता
सूक्ष्म व्यवसाय
आजीविका हेतु
स्वयं का कार्य
स्वरोजगार की
विशेषताएं
ग्रामीण
उद्योग
एक व्यक्ति का स्वामित्व और प्रबन्धन
आय निश्चित नहीं होती
पेशेवर
विनिर्माण
पूजीं निवेश की
आवश्यकता
प्रयास एवं परिणाम के बीच
सीधा सम्बंध